पहला अध्याय - विद्रोह : तात्पर्य, स्वरूप एवं परिभाषा

१. विद्रोह से तात्पर्य :

कहानी साहित्य में विद्रोह का प्रतिफलन आधुनिक काल के उत्तरार्ध में हुआ । सामान्यतः विद्रोह की प्रवृत्ति मनुष्य में जन्मतः निहित रहती हैं । विद्रोह व्यक्ति की निजी भावना है । विद्रोह की भावना का होना मनुष्य के लिए आवश्यक है ।

साहित्य में विद्रोह का प्रयोग पात्रों की अपनी कुंठित भावनाओं को व्यक्त करने के लिए होता है । वस्तुतः आज मानव की संवेदनाएँ, विचार और जीवन-दशा जटिल से जटिलतर हो रही है । इसलिए पीडित समाज या व्यवस्था के प्रति अपना क्रोध, आक्रोश प्रकट करने के लिए तैयार होता है । अपनी रूक्ष जीवन दृष्टि, कटुता, विघटन और मूल्यहीनता को सही रूप देने अथवा अपनी जटिल एवं विकृत संवेदनाओं को इन्द्रियगम्य बनाने के लिए वह अनायास ही विद्रोह का सहारा लेता हैं । मनुष्य के निजी जीवन में जो स्थितियाँ होती हैं, उन्हें प्रकट करने के संयम के एवं माध्यम समाप्त होते हैं, तो उन स्थितियों को प्रकट करने के लिए मनुष्य विद्रोह का अवलम्ब करता हैं ।

विद्रोह चमत्कारितापूर्ण पध्दति से सूक्ष्म एवं व्यापक कुंठाओं को व्यक्त करता है । अतः विद्रोह क्रान्ति का प्रतिनिधित्व करता हैं । प्रभाव या परिणाम की दृष्टि से विद्रोह की उपयोगिता जरूरी है । सम्भंवतः विद्रोह के आभाव में तीव्र भावों, संवेदनाओ को प्रकट करना मनुष्य के लिए सम्भंव नहीं । उसके प्रकटीकरण में प्रौढता तथा सशक्तता को लाना भी सम्भव नहीं होता है । ऐसी स्थिति में विद्रोह की भावना एवं प्रवृत्ति कारगर सिद्ध होती है ।

जीवन के सभी अंगों-भाष, साहित्य, कला, धर्म, दर्शन आदि क्षेत्र में विद्रोह किसी-न-किसी रूप में प्रकट होता है । अतः विद्रोह का उद्‌गम मानव मन का एक स्वाभाविक उद्रेक है । विद्रोह मानव की दमित भावनाओं को जागृत करके वह समाज के सामने पेश आता है । विद्रोह मनुष्य की एक प्राकृतिक एवं अद्‌भूत शक्ति है ।

प्रचलित मूल्यों के प्रति असंतोष ही विद्रोह है । विद्रोह प्रकटीकरण से व्यक्ति को शांति मिलती है, पर यह शांति इसलिए नहीं मिलती कि उसने विद्रोह किया, अपितु इस कारण मिलती है कि उसने परम्परा को अस्वीकार कर दिया हैं । परम्परा अगर बहुत दिनों से चली आती मनोभावों की

यात्रा का आखिरी पडाव हैं, तो विद्रोह प्रचलित मूल्यों के प्रति असंतोष हैं । यह एक गतिशील प्रक्रिया है । जब भी नये साधनों की उपलब्धि से संदर्भ बदलते हैं, तो बहुत-सी पुरानी बातें, मान्यता भूला दिये जाते हैं ।

जीवन और इतिहास के कालौ में ऐसे प्रसंग आते है जिससे विराट और आमूल परिवर्तन आवश्यम्भावी होते हैं । इसे ही 'विद्रोह' की संज्ञा दी जाती हैं । जीवन में भावना, चिन्तन का ढंग व्यापक क्रान्ति के कारण बदलने लगता हैं, पर ऐसी स्थिति में एकाध व्यक्ति के प्रयास की उपज क्रान्ति नहीं है । यह स्थिति अनेक परिस्थितियों और प्रभावों के कारण उत्पन्न होती है ।

दरअसल किसी भी विद्रोह की जड असंतोष में छिपी रहती हैं । असंतोष की यह भावना ही मनुष्य को किसी भी स्थिति से टकराने के लिए प्रेरित करती हैं । विद्रोह-भावना का आधार व्यक्तिगत अथवा सामूहिक असंतोष हैं । यह असंतोष कभी सामाजिक परिस्थितियों के विरूध्द उत्पन्न होता हैं तो कभी राजनीतिक । तात्पर्य यह है कि युवा पीढी का असंतोष ही विद्रोह का मार्ग निश्चित करता है ।

२. विद्रोह : व्युत्पत्ति एवं अर्थ -

व्युत्पत्ति :

विद्रोह मूलतः संस्कृत शब्द है । इसकी व्युत्पत्ति 'द्रुह' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है - वैर करना । संस्कृत में विद्रोह शब्द की व्यत्पत्ति "वि+द्रुह (वैर करना)+घञ्"[१] इस प्रकार दी हैं । 'द्रुह' मूल धातु हैं । 'वि' उपसर्ग हैं ।

'घञ्' यह प्रत्यय हैं । 'घञ्' प्रत्यय से द्रुह का द्रोह हुआ । विद्रोह शब्द इस प्रकार बना हैं । उसका अर्थ हैं किसी के प्रति किया जानेवाला द्रोह अर्थात शत्रुता पूर्ण कार्य । विशेषतः राज्य या शासन के प्रति अविश्वास या दुर्भाव उत्पन्न होने पर उसकी आज्ञा, विधान आदि के विरूध्द किया जानेवाला आचरण और व्यवहार, देश या राज्य में क्रान्ति करने के लिए किया जानेवाला उपद्रव ।

---

१. सं.रामचंद्र वर्मा - मानक हिन्दी कोश - पाँचवा खण्ड - पृ. ६४

विद्रोह विभिन्न अर्थ -

विभिन्न कोशों में विद्रोह के दिये हुये अर्थ इस प्रकार हैं -

१. "विद्रोह - व्देष । वह भारी उपद्रव जिसका उददेश्य राज्य को हानि पहुँचाना, उलटना या नष्ट करना हो । बलवा । बगावत ।"[१]

२. "विद्रोह - शत्रुता, वैर ।"[२]

संस्कृत में विद्रोह का अर्थ इस प्रकार हैं -

३. "द्रोह - पुं द्रुह भावे घन् . जिघांसा, अनिष्ट चिन्तनम, तत्पयर्य्यायः अपक्रिया ।"[३]

अंग्रेजी में विद्रोह के लिए पर्यायवाची शब्द इस प्रकार हैं -

४ "Revolt, Rebellion, uprising, Insurgency."[४]

५. "विद्रोह - पुं.सं. किसी के प्रति किए जानेवाला द्रोह, शत्रुतापूर्ण कार्य, राज्य या शासन के प्रति उपद्रव, आज्ञा, विधान आदि के विरूद्ध किए जानेवाला आचरण, उग्र व्यवहार, देश या क्रान्ति के लिए किया जानेवाला उपद्रव ।"[५]

६. "विद्रोह-व्देष, वह उपद्रव जो राज्य को हानि पहुँचाने या नष्ट करने के उददेश्य से हो । बलवा । बगावत ।"[६]

७. "विद्रोह - किसी के प्रति होनेवाला वह व्देष या आचरण जिससे उसको हानि पहुँचे, राज्य में होनेवाला भारी उपद्रव जो राज्य को हानि पहुँचाने या नष्ट करने के उददेश्य से हो । क्रान्ति । बलवा । बगावत ।"[७]

ऊपर दिये गये विभिन्न अर्थों को देखते हुये यहाँ विद्रोह का अर्थ स्पष्ट कर देना उचित होगा । विद्रोह से हमारा तात्पर्य है कि किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह के व्दारा किसी सत्ता, व्यवस्था, परम्परा, रूढि आदि का अस्वीकार और उसे समाप्त करने का प्रयास विद्रोह हैं । व्यवस्था आदि का सम्बन्ध राजनीति, समाज, नैतिकता, धर्म आदि किसी से भी हो सकता है । केवल राजनैतिक सत्ता या व्यवस्था का अस्वीकार, और उसे समाप्त करने का प्रयत्न मात्र विद्रोह नहीं हैं । वह विद्रोह

१.	आदिशकुमार जैन	-	नालन्दा विशाल शब्द सागर	-	पृ.१२६८
२.	सं. प्रल्हाद नरहर जोशी	-	आदर्श मराठी शब्दकोश	-	पृ.११५२
३.	राधाकान्त देव	-	शब्द कल्पद्रुमः - व्दितीय भाग	-	पृ. ७६३
४.	डा.हरदेव बहारी	-	उच्चतर हिन्दी अंग्रेजी कोश	-	पृ. २८४
५.	सं.डा.गोविन्द चातक	-	आधुनिक हिन्दी शब्द कोश	-	पृ. ५२२
६.	नागरी प्रचारिनी सभा काशी	-	संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर	-	पृ. ८९६
७.	सं.श्यामसुन्दरदास	-	हिन्दी शब्द सागर	-	पृ.४४८४

का केवल एक प्रकार विशेष है । विद्रोह राजनैतिकेतर सत्ताओं एवं व्यवस्थाओं के खिलाफ भी हो सकता है ।

विद्रोह : अभिप्रेत अर्थ -

उपर्युक्त विभिन्न अर्थों को देखते हुए विद्रोह शब्द की व्याप्ति पर गौर करते हुए हम अनुभव करते हैं कि, हमारे युग में असंतोष औद्योगिक केन्द्रों, शैक्षिक संस्थाओं, प्रशासनिक व्यवस्था और ग्रामीण अर्थतंत्र में भी विद्यमान हैं, जो कभी-कभी उग्र रूप धारण कर लेता हैं । यहाँ इस बात पर बहस करना व्यर्थ होगा कि इन क्षेत्रों में बढते हुए असंतोष अथवा आक्रोश की तार्किक स्थिति क्या है ? क्यों कि असंतुष्ट वर्ग कई बार तर्क-वितर्क की स्थिति से विरत होकर कार्य करता है और अनेक बार विभिन्न राजनीतिक दल उसमें बढते हुए आक्रोश का लाभ उठाने के लिए उसे अपने हित में प्रयोग करने लगते हैं । फिर भी यह बात संदेह से परे है कि असंतोष की मुख्य धारणा ही व्यक्ति या वर्गों को गतिशील एवं आंदोलित रखती हैं । यह आंदोलन यदि अनुशासित तथा ठीक दिशा में हो जाए और इसका आधार वैज्ञानिक सिध्दान्तों पर हो तो उससे निर्माण की संभावनाएँ भी निश्चित रूप में बढ जाती हैं किंतु यदि यही आंदोलन दिशाहीन, अनुशासनहीन और केवल आवेश के वशीभूत हो तो व्यक्ति व समूह दोनों के लिए व्यापक विनाश का कारण बनता हैं । हमारे ही युग में असम, पंजाब, तेलंगना एवं नक्सलवाडी के आंदोलन इस बात के पुष्ट प्रमाण हैं ।

ये सभी आंदोलन, चाहे इनका लक्ष्य न्यायोचित हो या न हो किंतु इस वास्तविकता को तो सिध्द करते ही हैं कि हमारे देश में विशेषकर युवा पीढि में असंतोष विद्यमान हैं । इस असंतोष का वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण किया जाना चाहिए । सीधे तौर पर ध्यान देने से रोजगार के अवसरों का सीमित होना, प्रतिभाओं का उचित प्रयोग न होना, विभिन्न वर्गों के मध्य उँच-नीच का भाव, भारत जैसे विशाल देश में उत्तर व दक्षिण की विचारधाराओं और भाषाओं का टकराव, प्रांतीयतावाद, साम्प्रदायिकता, छात्रों और शैक्षिक व्यवस्था के बीच बढती हुई खाई आदि ऐसे कुछ कारण हैं, जो विभिन्न स्तरों पर असंतोष की भावना को तीव्र करते हैं, जिससे कभी विद्रोह की विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो जाती है । छोटे स्तर पर विभिन्न परिवारों, वंशो एवं जातियों के बीच विद्रोह का बीज विकराल रूप धारण कर लेता हैं और उसमें झगडे तथा पारस्परिक व्दन्व्द पलते रहते हैं । उक्त परिस्थितियों से युवा पीढी या तो निरंकुश हो जाती है, सामाजिक व्यवस्था को दुषित करती हैं, अत्याचारों को जन्म देती है, बाहरी दुनिया से टकराकर निष्फल हो जाने पर एक ऐसी निराश में सांस लेती है कि स्वयं से विद्रोह कर बैठती हैं

और उसका अन्त होता ही है ।

३. विद्रोह की परिभाषा :

विद्रोह शब्द के विभिन्न अर्थों को देखते हुए उसे निम्नांकित ढंग से परिभाषित किया जा सकता हैं -

"प्रस्थापित, कालबाहय, अन्यायपूर्ण तत्व, विचार, व्यवस्था के खिलाफ अपनी नापसंदगी व्यक्त करना विद्रोह है । विद्रोह सशस्त्र भी हो सकता और निःशस्त्र भी । विद्रोह के मूल में न सिर्फ कालबाहय व्यवस्था को ठुकराने का मकसद होता है अपितु नयी न्यायपूर्ण, कालसंगत व्यवस्था, विचार, तत्व के निर्माण का आग्रह भी होता है । विद्रोह अपने आप में परिवर्तन का समग्र विचार होता है ।"

विद्रोह को अँग्रेजी में ' Rebellion ' कहते हैं ।

* Rebellion 'एनसायक्लोपिडिया ब्रिटानिका' में इसको इस प्रकार परिभाषित किया हैं -

Armed resistance for pollitical purposes by national of a state against the goverment usually resulting in insurrection civil war of revolution.

" In law rebellion is the act of one who engages its in such resistance and is therefore subject to prosecution for treason, sedition or rebellion." 1

* Sedition - अँग्रेजी में विद्रोह का एक और पर्यायवाची शब्द है - ' Sedition'

" Sedition is a very elastic term including offence ranging from lible to treason. Sedition is a common law indictable misdemeanour and embraces everything wheather by word, deed or writting which is calculated to disturb the tranguillity of the state and lead ignorant person to endeavour to subvert the government and laws of the empire " 2

---

1. Encyclopedia Britannica - Vallume - 19 - P. 10
2. Encyclopedia Britannica - Vallume - 20 - P. 271

इस प्रकार किसी व्यक्ति या व्यक्ति-समूह के व्दारा किसी, सत्ता, व्यवस्था, परम्परा, रूढि आदि का अस्वीकार और उसे समाप्त करने का प्रयत्न विद्रोह है। व्यवस्था आदि का सम्बन्ध राजनीति, समाज, नैतिकता, धर्म आदि किसी से भी हो सकता है। केवल राजनैतिक सत्ता या व्यवस्था अस्वीकार, विरोध और उसे समाप्त करने का प्रयत्न मात्र ही विद्रोह नहीं है। वह विद्रोह का केवल एक प्रकार विशेष है। विद्रोह राजनैतिकेतर सत्ताओं एवं व्यवस्थाओं के खिलाफ भी हो सकता हैं। विद्रोह के लिए उसकी सफलता अनिवार्य नहीं हैं। प्रत्येक विद्रोह सफल हो तभी हम उसे विद्रोह माने अन्यथा नहीं, यह ठीक नहीं है। अलग-अलग विद्रोहों की प्रकृति, तीव्रता, कालावधि और परिणति अलग-अलग हो सकती है। यह तो हो सकता है कि हम एक प्रकार के विद्रोह को समर्थन दें, दूसरे प्रकार के विद्रोह को समर्थन न दें, किन्तु यह नहीं हो सकता कि हम एक प्रकार के विद्रोह को माने, दूसरे प्रकारे के विद्रोह को विद्रोह न मानें।

४. विद्रोह का स्वरूप :

उपर्युक्त विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि विद्रोह एक परिवर्तन सापेक्ष प्रक्रिया एवं प्रतिक्रिया हैं। सुख-शांति की चिन्ता तो प्रत्येक काल में समाज-उद्धारकों को हमेशा उद्वेलित करती रही हैं किन्तु सृष्टि विनाश तथा निर्माण, ध्वंस एवं रचना की जो लीला चलती रहती हैं, उसी का सामाजिक रूप विद्रोह है। प्रगति के लिए सामाजिक, नैतिक और राजनीतिक विद्रोह अनिवार्य माना गया हैं। नवीन विचारों तथा प्राचीन विचारों के बीच मेल न बैठने पर विद्रोह का जन्म होता हैं। स्वतंत्रता तथा समानता मानव का जन्मसिद्ध अधिकार हैं। जब समानता तथा स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा दिया जाता हैं तो मनुष्य के मन में विद्रोह की भावना जन्म लेती है। इसी प्रकार शताब्दियों से चली आ रही कुरीतियों के फलस्वरूप विद्रोह का जन्म होता हैं। गरीब और अमीर के वैषम्य में विद्रोह भावना प्रस्फुटित होती हैं। ये विद्रोह भावनाएँ ही अन्त में क्रान्ति का रूप धारण कर लेती है।

विद्रोह का क्षेत्र व्यापक है। शिक्षा विद्रोह को जन्म देती है। शिक्षित जनता नवीनता लाना चाहती है। विचारक जनता को उत्तेजित करते हैं। वे ही उलटफेर करने को जनमत में उत्तेजना लाते हैं। विद्रोह का आरंभिक रूप विचारों में जन्म लेता हैं।

जब-जब अपने आस पास की बिगडी हुई स्थितियाँ, विपरित दशाएँ देखी जाती है, तब

कुछ स्वराज्य प्रेमी नेताओं का मन उद्वेलित हो उठता हैं, मन में चिढ निर्माण होती हैं । ऐसी चिढ बिगडी परिस्थितियों में आमूल परिवर्तन लाने के लिए प्रयासशील रहती है । परिवर्तन के साथ साथ प्रगति के पथ को भी अपनाना जरूरी हैं । सिर्फ दुरावस्था को पलट देने को ही परिवर्तन नहीं कहा जाएगा । मानव समाज की समस्याओं को सुलझाने के लिए अनेक प्रकार के आंदोलन सर्वत्र होते रहते हैं। इसमें विद्रोह का स्थान महत्वपूर्ण हैं । मानव जाति के विकास में विद्रोह का बडा महत्व है ।

विद्रोह सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण साधन हैं । मौलिक परिवर्तन से यह स्थिति निर्माण होनी चाहिए, जिससे मानव तथा उसके विकास का पथ सदा आगे की ओर न्यायपूर्ण प्रतिष्ठा, सम्मान तथा मूलभूत अधिकारों का दान देते-देते प्रवाहित होता है ।

जिस समय सामाजिक व्यवस्था में पुनर्निमाण की आवश्यकता महसूस होती है तब पुरानी रूढियों, रीति - रिवाजों को वर्तमान स्थितियों की तथा आवश्यकताओं की कसौटीपर कसकर उनके सत्य या असत्य होने का निर्णय होने लगता हैं । जिस समय वास्तविकता के लिए समाज कटिबध्द होने लगता हैं उस समय शब्द के पुर्नजन्म का दर्शन कराने में जनता समर्थ रहती हैं । जब कभी जनता की भलाई की आवाज उठने लगती है तब समाज की भलाई के लिए कुछ नियम बनाये जाते हैं । परंतु नियमों के होने पर भी जनता के कल्याण का ध्यान नहीं रखा जाता तथा कुप्रथाओं से देश की हानि होने लगती हैं तब पतन से बचने के लिए एक ही उपाय रह जाता हैं और वह - विद्रोह । अन्याय पर अवलंबित वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन करना विद्रोह का हेतु रहता हैं ।

विद्रोह के कारण हुये विध्वंस से जनता के मन में संभ्रम निर्माण होता है कि विद्रोह एक ऐसी घटना है जो एकाएक आश्चर्यजनक तथा हिंसात्मक होती है, देश में चारों तरफ अत्याचार, रक्तपात, अपमान और हत्याएँ होती हैं । विप्लव शब्द से ही उसको हिंसा तथा घृणा की गंध आती है। वास्तव में यह सही नहीं हैं, विद्रोह एक पवित्र नाम है । प्रकृति की दी हुई एक स्थिर सत्य की देन है । सत्य की आवाज है वह । विप्लव के रूप में न्याय का प्रबल हुँकार उसमें छिपा हुआ हैं । संभवतः इसी डर से अत्याचारी सरकार विद्रोह के अंकुर को दबाने का प्रयास करती है । विद्रोह से विध्वंस होता है यह सही है, परंतु उससे जो नव-निर्माण और नवरचान होती है वह देखने से उसकी तुलना में विध्वंस या हिंसा कम ही होती है । विद्रोह हमें अवनति की ओर नहीं बल्कि उन्नति के पथ पर ले जात है । विद्रोह से जनता के हक और अधिकारों में वृद्धि होती है । संघर्ष में जीवित रहने

की प्रबल प्रेरणा तथा शक्ति निर्माण होती है । इस कारण प्रखर विरोध के बावजूद भी विद्रोह सफलता की मंजिल को पार करती हैं ।

५. विद्रोह के भेद ।

१. राजनीतिक विद्रोह ।

परतंत्रता को खत्म करने के लिए होनेवाला विद्रोह 'राष्ट्रीय विद्रोह' कहा जाता है । इस विद्रोह में जनता को अपनी पूर्णशक्ति का प्रयोग करना पडता है । इस प्रकार का विरोध उग्र होता है।

विदेशी सत्ता विद्रोह को रोकने के लिए क्रूर साधनों का प्रयोग करती हैं । वह जनता का शोषण एवं दमन करती है तथा जनता को आतंकित भी करती रहती है । ऐसी दशा में विद्रोही कार्यों में बडी कठीनाई होती हैं । फिर भी विद्रोही शासकों का सामना करते रहते हैं, संघर्ष करते रहते हैं और आवश्यकता पडने पर प्राणों का भी बलिदान करते हैं । राष्ट्रीय विद्रोह की यह विशेषता रहती है कि सम्पूर्ण जनता का हाथ इसमें रहता है । अन्त में न्याय की जीत होती है । वह विशुद्ध राजनीतिक विद्रोह का स्वरूप हैं । 'विद्रोह' सत्य की पुकार हैं । वह राजनीतिक धार्मिक तथा सामाजिक जीवन को स्वस्थ बनाती हैं ।

२. सामाजिक विद्रोह :

मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति हो और सबको अपने विकास और उत्कर्ष का समान अवसर प्राप्त होने के उद्देश्य को लेकर ही समाजवादी विद्रोह का विकास हुआ हैं । समाज में निरंतर दो वर्ग (उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग) रहे हैं । निम्न वर्ग को उच्च वर्ग ने दबाकर उनकी निर्बलता का लाभ उठाया हैं । इसी कारण प्राचीन समाज में राजा-प्रजा संबंधों का उदय हुआ । दूसरे समाज में उत्पन्न कुरितियों ने भी समाज की अवनति की । कुरितियों के नाश से ही समाज का पुनर्निर्माण हो सकता हैं । इसके लिए सामाजिक विद्रोह अनिवार्य हैं । सामाजिक विद्रोह के फलस्वरूप समाज एक नया मोड लेता है । सामाजिक विषमता जैसे - छुआछूत आदि विषैली भावना को विद्रोही दल समाज से उखड कर फेंक देना चाहते हैं । समाज जब अन्याय और अत्याचारों से ग्रस्त हो जाता हैं, तो उसके दो ही परिणाम होते है - या तो मानवता पर किये जा रहे भीषण अत्याचारों से भयभीत हो, निराशा का जन्म

होता है या फिर अत्याचारों के विरूद्ध आवाज उठती हैं। बस यही प्रेरणादायीनी शक्ति अन्ततः विद्रोह या क्रान्ति के रूप में फूट पडती हैं। सामाजिक विद्रोह से समाज नवचेतना प्राप्त करता है।

३. धार्मिक विद्रोह :

जब धर्म के नाम पर समाज में अत्याचार एवं अन्याय का प्रचलन होता हैं तब उस धर्म के विरोध में यह विद्रोह होता हैं। समाज में जब धर्म के नाम पर अनेक आडम्बर प्रचलित हो जाते हैं, तो उसका पतन होने लगता है। जैसे-हिन्दु धर्म का पतन उसके कर्मकाण्ड के कारण हुआ तो बौद्ध धर्म का पतन उसकी गुप्त साधना से। इन्हीं सब बातों ने धार्मिक विद्रोह की जडे मजबूत की हैं।

भारत एक धर्म-प्रधान राष्ट्र हैं। अतः जीवन के विविध क्षेत्रों से धर्म का महत्वपूर्ण स्थान हमेशा प्रबल रहा हैं। मध्य युग में भारतीय धर्म में अनेक दोष आ गये थे। उसका वास्तविक स्वरूप बाहयाडम्बर और अन्धरूढियों से ग्रस्त हो गया था। जब-जब समाज में धर्म को आलम्बन बनाकर अत्याचार होते हैं, तब-तब धर्म के उस मिथ्या रूप के विरोध में धार्मिक विद्रोह होता है।

४. आर्थिक विद्रोह :

आज संसार में संघर्ष का मूल कारण आर्थिक विषमता ही है। आर्थिक विकास के लिए मानव-मानव में ही नहीं, देश-देशान्तर में भी होड लगी हुई हैं। आर्थिक विषमता के कारण दो वर्ग बन जाते है- शोषण करनेवाला वर्ग आर्थत पूँजीपति वर्ग तथा दूसरा शोषित वर्ग अर्थात सर्वहारा वर्ग। शोषण अधिक समय तक चल नहीं पाता और शोषित जनता उनके प्रति घृणा करने लगती हैं। यही घृणा एक दिन आर्थिक विद्रोह का रूप धारण कर लेती है। इससे न सिर्फ सामाजिक अपितु राजनीतिक परिवर्तन भी इतिहास काल में देखें जा सकते है।

५. सांस्कृतिक विद्रोह :

सांस्कृतिक जडता किसी भी मनुष्य या राष्ट्र की सबसे बडी कमजोरी हैं। उसके कारण ही सारी जाति का पतन हो जाता हैं। छुआछूत आदि भेदों भेदों में फँसकर मानव पाप

करता हैं, जिनके कारण समाज के अनेक वर्गों में आर्थिक और सामाजिक भेद बढ जाते हैं । सांस्कृतिक विद्रोह का उदय विचार और व्यवहार, व्यक्ति और समाज तथा अन्य अनेक इकाइयों के माध्यम से होता हैं । सांस्कृतिक विद्रोह की गति बडी धीमी होती हैं ।

६. साहित्यिक विद्रोह :

साहित्यकार की पुकार समाज की पुकार होती है । वह समाज के भावों को अपनी वाणी से शक्ति ही नहीं देता, बल्कि नयी दिशा, नयी चेतना भी देता हैं । समाज की माँगों और आवश्यकताओं को जन-साधारण के सामने रखकर जहाँ उनमें अपने कर्तव्य के प्रति सतर्कता जगाती हैं, वहाँ सामाजिक विकृतियों के प्रति विद्रोही भी जाग उठता है । साहित्यकार जो साहित्य रचता है वह जीवन की ही अभिव्यक्ति होती हैं । साहित्य का जीवन से दुहरा सम्बन्ध हैं । एक क्रिया रूप में, दूसरा प्रतिक्रिया रूप में । क्रिया रूप में वह जीवन की अभिव्यक्ति है और प्रतिक्रिया रूप में जीवन का निर्माता और पोषक । यह प्रतिक्रिया जब संघर्ष का रूप धारण कर लेती है तो वह साहित्यिक विद्रोह हो जाता हैं । विद्रोही साहित्य का प्रादुर्भाव प्रताडित जन-समुदाय के भग्न या विदीर्ण हृदय से होता है । साहित्यकार इन सबको संग्रहित कर विद्रोह की भावना जगाता हैं ।

निष्कर्ष :

विद्रोह मनुष्य की प्रवृत्ति विशेष है । अन्य प्रवृत्तियों का प्रतिबिंब जैसे साहित्य में प्रारंभ से होता आया है, वैसे ही विद्रोह का भी । विद्रोह मूलतः संस्कृत शब्द है जो 'द्रुह' धातु से बना है । जिसका अर्थ किसी व्यक्ति या तत्व के प्रति द्रोह या विरोध करना है । विद्रोह में प्रतिकार की भावना प्रतिबिंबित होती है । यह प्रतिकार कभी सशस्त्र होता है तो कभी निःशस्त्र । साहित्य में शब्द, भाव आदि के जरिये विद्रोह की भावना स्पष्ट की जाती हैं । आज के युग में समाज के सभी क्षेत्रों में विद्रोह देखा जाता है । विद्रोह के मूल में न सिर्फ विरोध का भाव होता है अपितु परिवर्तन का भी । परिवर्तन में सिर्फ कायाकल्प अपेक्षित नहीं होता । परिवर्तन पुराने की जगह नविनता का, अन्याय की जगह न्याय का प्रारंभ होता हैं । साहित्य में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक विद्रोह वर्णन से समाज के यथार्थ दर्शन के साथ बुरे की जगह अच्छे काम, अनाचार की जगह सदाचार, अत्याचार की जगह समाचार का आग्रह रहता है । इसलिए विद्रोहयुक्त साहित्य एक अर्थ में प्रागतिक और परिवर्तनशील साहित्य माना जाता है ।

' विद्रोह की कहानियाँ ' से यहाँ अभिप्रेत ऐसी कहानियाँ जो उपर्युक्त विवेचन के अनुसार भूत की जगह वर्तमान का आग्रह रख समाज के विभिन्न क्षेत्रों के दमन, अशांति, अन्याय के खिलाफ अपना आवाज बुलंद कर नवनिर्माण का पथ प्रशस्त करने की जीद रखती है । डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल सम्पादित ' विद्रोह की कहानियाँ ' में हिन्दी साहित्य की ऐसी कहानियाँ संकलित हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों में विद्रोह का स्वर भरती है । उनके जरिये विद्रोह के न सिर्फ स्वरूप का अपितु उसके जरिये होनेवाले समाज परिवर्तन का अध्ययन एक विशिष्ट सीमा में किया गया हैं । यह स्पष्ट है कि इन कहानियों में साहित्यिक पक्ष को केन्द्र बनाकर उन्हें रखा है । पर इन कहानियों का सामाजिक विचार अपना बलस्थान धारण किये हुये है इसे कौन नकारेगा ?